

1 मई, श्रमिक दिवस पर विशेष-

तोड़ो, व्यसनों की कारा तोड़ो

ब्रह्माकुमारी उर्मिला, संयुक्त संपादिका

अन्तर्राष्ट्रीय मजदूर दिवस को अन्तर्राष्ट्रीय कर्मचारी दिवस भी कहते हैं। इसे मई दिवस, कामगार दिवस, श्रम दिवस, श्रमिक दिवस आदि नामों से भी जाना जाता है। धूप में, गर्मी में, कठिन प्राकृतिक परिस्थितियों में काम करने वाले को हम मजदूर समझते हैं परन्तु इस शब्द का दायरा बहुत विशाल है। मजदूर वर्ग में वे सभी लोग आते हैं जो किसी संस्था या निजी तौर पर किसी के लिए काम करते हैं और बदले में मेहनताना लेते हैं। शारीरिक व मानसिक रूप से मेहनत करने वाला हर इन्सान मजदूर है, फिर चाहे वह ईंट-सीमेंट से सना हो या ए.सी.कार्यालय में फाइल के बोझ तले बैठा कर्मचारी हो।

श्रमिक दिवस – संक्षिप्त इतिहास

पुराने जमाने में मजदूर और कामगार वर्ग की स्थिति अत्यन्त दयनीय थी। उनसे दिन में 12 से 15 घन्टे तक काम कराया जाता था। कार्यस्थल इतने विषम और प्रतिकूल होते थे कि आए दिन मजदूरों की अकस्मात मृत्यु की घटनाएँ होती रहती थी। इन परिस्थितियों के चलते अमेरिका में मजदूर समस्या निवारण संघ तथा समाजवादी संघ द्वारा मजदूरों के कल्याण के लिए आवाज उठाई जाने लगी।

अन्तर्राष्ट्रीय श्रम दिवस को पीटर एम.सी.गुइर (Peter Mc Guire), जो कि एक कारपेन्टर और यूनियन लीडर थे, का ब्रेन चाइल्ड माना जाता है और इस दिन को मनाने की शुरुआत एक मई, 1886 से मानी जाती है। उस समय अमेरिका की मजदूर यूनियनों ने दैनिक मजदूरी कार्य के समय को 8 घण्टे से ज्यादा न रखे जाने के लिए जबरदस्त मांग उठाई और 13000 छोटे-बड़े उद्योग-धन्धों से जुड़े असंख्य कामगार एक साथ हड़ताल पर चले गए। इसी हड़ताल के दौरान शिकागो की 'हेय मार्केट' में बम धमाका हो गया। बम किसने फेंका था, पता नहीं परन्तु पुलिस ने गोली चला दी और 7 मजदूर मारे गए। मजदूर वर्ग की समस्या से जुड़ी इस घटना ने समग्र विश्व का ध्यान अपनी ओर खींचा था। कुछ समय बाद अमेरिका में 8 घन्टे काम करने का समय निश्चित कर दिया गया था। इसके बाद सन् 1889 में अन्तर्राष्ट्रीय समाजवादी सम्मेलन में एलान किया गया कि हेय मार्केट नरसंहार में मारे गए निर्दोष लोगों की याद में एक मई को अन्तर्राष्ट्रीय मजदूर दिवस के रूप में मनाया जाएगा और इस दिन सभी कामगारों का अवकाश रहेगा। वर्तमान समय भारत तथा अन्य देशों के मजदूरों के लिए 8 घन्टे काम करने से सम्बन्धित कानून लागू है।

भारत में श्रम दिवस सबसे पहले चेन्नई में एक मई, 1923 को मनाना शुरू किया गया था। इसकी शुरुआत भारतीय मजदूर-किसान पार्टी के नेता कामरेड सिंगरावेलू चेट्टार ने की थी। उस दिन मद्रास हाईकोर्ट के सामने कामगारों का जबरदस्त आंदोलन हुआ और यह सहमति बनाई गई कि इस दिवस को भारत में भी कामगार दिवस के तौर पर मनाया जाए और इस दिन छुट्टी का भी एलान किया जाए। भारत सहित 80 देशों में यह दिवस पहली मई को ही मनाया जाता है। महात्मा गांधी मानते थे कि देश का विकास दक्ष कामगारों और किसानों पर

निर्भर करता है इसलिए उद्योगपति, मिल मालिक और प्रबन्धक स्वयं को 'मालिक' नहीं, 'न्यासी (Trustee)' ही समझें।

'भाई लालो दिवस'

गुरुनानक देव जी ने किसानों, मजदूरों और कामगारों के हक में आवाज उठाई थी और उस समय के अहंकारी और लुटेरे हाकिम ऊँट-पालक भागों की रोटी न खा कर उसका अहंकार तोड़ा और भाई लालो की नेक कमाई को सत्कार दिया था। इसलिए एक मई को 'भाई लालो दिवस' के तौर पर भी सिक्ख समुदाय में मनाया जाता है।

हर आत्मा जन्मजात राजा

भगवान ने धरती पर किसी को भी मजदूर बनाकर नहीं भेजा, सभी को राजा बनाकर भेजा है। हम सभी भगवान के राजा बेटे हैं। मानव जीवन पुरुष और प्रकृति का खेल है। आत्मा पुरुष, प्रकृति के बने शरीर को धारण कर रंगमंच पर अपनी भूमिका का निर्वहन करती है। इस अर्थ में हरेक आत्मा जन्मजात मालिक (राजा) है और शरीर तथा कर्मेन्द्रियाँ उसके कर्मचारी और नौकर हैं। जब व्यक्ति स्व स्वरूप में टिककर, अपने को इन्द्रियों का राजा अनुभव करते हुए कर्म करता है तो कर्म खेल लगता है, कर्म आनन्दकारी बन जाता है। इसके विपरीत, यदि वह देह के अभिमान में अर्थात् स्वयं को देह मानकर कर्म करता है तो उसे कर्म करते भारीपन आता है, आलस्य भी आता है और वह कामचोर भी कभी बन जाता है। 'मैं आत्मा राजा हूँ और कर्मेन्द्रियाँ मेरी कर्मचारी हैं' यदि वह इस स्मृति को बनाए रखे, साक्षी होकर कर्मेन्द्रियों से कार्य करवाए तो वह कर्मचारी जैसा कार्य करते भी राजा जैसी ऊँची स्थिति का आनन्द ले सकता है।

श्रम का सम्मान

फ्रांस के सम्राट नेपोलियन बोनापार्ट एक दिन अपनी पत्नी के साथ पेरिस की सड़कों पर पैदल चलने का आनंद ले रहे थे। मार्ग में मिलने वाले नागरिक, सम्राट के सम्मुख सिर झुका कर उनका अभिवादन कर रहे थे। महारानी को आम प्रजा के बीच इस तरह पैदल चलना बहुत अटपटा लग रहा था। दोनों चलते-चलते जब एक तंग गली में पहुँचे तो सामने से एक निर्धन लकड़हारा सिर पर लकड़ियाँ रखे निकला। सम्राट स्वयं एक ओर हो गए और उन्होंने महारानी को भी किनारे हटने का इशारा किया। महारानी को यह बहुत अपमानजनक लगा। वे झुँझलाकर बोलीं, 'यह लकड़हारा बहुत असभ्य प्रतीत होता है। उसने हमें अभिवादन तक नहीं किया। क्या यह सम्राट का अपमान नहीं? पर आप हैं कि एक किनारे हो गए।' महारानी की बात सुन नेपोलियन गंभीर होकर बोले, 'महारानी, श्रम का अभिवादन करना किसी भी सम्राट को अभिवादन करने से अधिक महत्वपूर्ण है। श्रम से ही मनुष्य की पहचान होती है। श्रम से ही राष्ट्र का निर्माण होता है। इसलिए हमें श्रम का सम्मान करने में कभी हिचकिचाना नहीं चाहिए।'।

कार्य छोटा नहीं, विचार छोटे

कार्यों का विभाजन नहीं हो सकता कि अमुक कार्य छोटा है और अमुक बड़ा, छोटे या बड़े तो मानव के विचार होते हैं। कोई व्यक्ति ऊँचे सिंहासन पर बैठकर भी यदि हृद के, स्वार्थ के, देहभान के विचार रखता है तो वह नाम भर के लिए ही ऊँचा है, असल में नहीं और कोई रास्ते की सफाई करते भी ऊँचे विचारों में रमण करता है तो वास्तव में ऊँचा वही है।

हर शरीरधारी को अपने शरीर की धुलाई-सफाई तो प्रतिदिन करनी ही होती है। यदि धुलाई-सफाई का काम छोटा समझा जाए, तो हर प्राणी इस छोटे काम को रोज करता है और जब तक जीयेगा, करता रहेगा, फिर बड़प्पन का अहंकार क्यों? बड़ा तो वह तब बने जब प्रजापिता ब्रह्मा बाबा के समान देह से न्यारा हो, फरिश्ता रूप धारण करे और मैला करने वाले मैं, मेरे से मुक्त हो जाए। जिस कार्य से समाज के लोगों को सुख, सुविधा, स्वच्छता, आराम मिलता हो वह कार्य कभी छोटा नहीं हो सकता।

मजदूर अपने खून-पसीने की खाता है, थोड़े में खुश रहता है, अपनी मेहनत और लगन पर विश्वास रखता है तथा किसी के सामने हाथ फैलाना पसन्द नहीं करता है। इसलिए वह समाज की उन्नति के लिए अति-अति महत्त्वपूर्ण है, सलाम का हकदार है।

धन प्राप्ति का आधार श्रम

चाणक्य ने कहा है – “जैसे धर्म करने से पाप नहीं रहता, मौन धारण करने से कलह नहीं होता, सजग रहने से भय नहीं होता, उसी प्रकार निरंतर मेहनत करने से दरिद्रता नहीं ठहर पाती।” निःसंदेह निर्धनता को परास्त करने का महामंत्र है निष्ठापूर्ण श्रम।

श्रम – अचूक औषधि

आधुनिक युग में जबकि विज्ञान ने मानव को बटन दबाने की देरी भर में सुख के सभी साधन उपलब्ध करा दिए हैं, श्रम का महत्त्व केवल धन के सुख के लिए नहीं बल्कि स्वास्थ्य का सुख पाने के लिए भी बढ़ गया है। देखने में आ रहा है कि कड़ी मेहनत करके श्रमिक, जमीन या साधारण चारपाई पर भी गहरी नींद सोता है जबकि श्रम से कतराने वाला व्यक्ति नरम गद्दों पर भी करवटें बदलता है। श्रमिक को मोटी रोटी और छाछ भी हजम हो जाती है जबकि श्रमहीन व्यक्ति को स्वादु और तथाकथित सन्तुलित भोजन भी बदहजमी पैदा कर देता है। श्रम करने से शरीर की कसरत हो जाती है और बीमारियाँ पास नहीं फटकती जबकि आरामतलब व्यक्ति मोटापा तथा अन्य कई प्रकार की बीमारियों से अनायास ही ग्रसित हो जाता है अतः हम धनिक हैं तो भी थोड़ा-बहुत श्रम अवश्य करें, अपने बगीचे में पेड़-पौधों की सेवा, प्रातःकालीन सैर, अपने शरीर के छोटे-छोटे कार्य स्वयं निपटाने की आदत डालें तो आत्मनिर्भर बनेंगे, प्रसन्न रहेंगे और स्वस्थ भी रहेंगे। इस सम्बन्ध में एक कहानी याद आती है—

एक धनवान सेठ को रात भर नींद नहीं आती थी। एक दिन नगर में पधारे हुए एक साधु को उसने अपनी परेशानी बताई। साधु ने कहा, “वत्स, तुम्हारे रोग का कारण तुम्हारा अपंग होना है।” सेठ हैरानी से बोला, “महाराज,

में अपंग हूँ? साधु विनम्रता से बोले, “अरे भाई, वास्तविक अपंग तो वही होता है जो हाथ-पैर सही सलामत होने पर भी उनका इस्तेमाल नहीं करता। बताओ, दिनभर में तुम अपने शरीर से कितना काम लेते हो?” सेठ चुप हो गया क्योंकि वह तो छोटे-छोटे काम के लिए भी नौकरों पर निर्भर रहता था। साधु बोले, “अगर अनिद्रा से बचना है, तो इतनी मेहनत करो कि थक कर चूर हो जाओ, अनिद्रा अपने आप दूर हो जायेगी।” सेठ ने ऐसा ही किया और गहरी व चिंतामुक्त निद्रा का आनंद लिया।

व्यसनों द्वारा शोषित होने से बचें

वर्तमान समय व्यसन पदार्थों के बढ़ते प्रचलन के कारण श्रमिक भी इनकी चपेट में आ रहे हैं। वे जितना कमाते हैं उसका काफी हिस्सा इन पर गवाँ देते हैं। उनके शरीर पर इनका बहुत बुरा प्रभाव पड़ता है, कार्यशक्ति का ह्रास होता है, थके-थके रहते हैं, घर में कलह और अभाव पैदा होते हैं और आयु कम होने से अकालमृत्यु का भी शिकार हो जाते हैं। अतः हमारे श्रमिक भाइयों को इस श्रम दिवस पर यह आत्मचिन्तन जरूर करना चाहिए कि वे उद्योगपतियों और मालिकों की शोषणकारी नीतियों से तो मुक्त हो गए, सरकार ने उसके कार्य के घंटे और आय भी निश्चित कर दी है परन्तु यदि वे स्वयं के व्यसनों की आदतों से शोषित हैं तो इनसे मुक्ति कौन दिलाएगा?

प्रण लें

अतः श्रम दिवस पर सभी श्रमिक स्वयं द्वारा स्वयं के शोषण से बचने का प्रण लें। धन, तन और परिवार का नाश करने वाली स्वयं की गलत आदतों से छूटने की प्रतिज्ञा अवश्य करें। सरकार तथा गैर-सरकारी संस्थाएँ और वे संस्थान जहाँ वे सेवारत हैं, समय-समय पर निःशुल्क व्यसन-मुक्त शिविर आयोजित कर इन्हें जागृति दें। प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय इस क्षेत्र में विशेष प्रयत्नशील है और लाखों को व्यसनमुक्त बनाने में सफल हुआ है। स्थानीय ब्रह्मा कुमारीज केन्द्र और मुख्यालय – दोनों ही इस सेवा में तत्पर हैं। श्रमिकों और श्रम को सलाम करते हुए पुनः अपने कर्मठ श्रमिक भाई-बहनों से एक ही अपील है, तोड़ो, व्यसनों की कारा तोड़ो।